मेघदूत विषयक वक्तव्य: 04

मेघदूत (पूर्व मेघ) 16 से 20 श्लोक अनुवाद सहित

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स प्रथम वर्षीय छात्र-छात्राओं के द्वितीय पत्र की प्रथम अन्विति के लिए। मेघदूत के पूर्व मेघ के 1 से 25 तक श्लोकों का हिंदी अनुवाद विषयक पाठ्य सामग्री)

पाठ्य संकलनकर्त्ता: डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, मारवाड़ी कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

(16)

त्वय्यायन्तं कृषिफलमिति भ्रूविलासानभिज्ञै:

प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनै: पीयमान:।

सद्य: सीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारुह्य मालं

किंचित्पश्चाद् व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण।।

अर्थ:- खेती का फल तुम्हारे अधीन है - इस उमंग से ग्राम-वधूएं भौंहें चलाने में भोले, पर प्रेम से गीले अपने नेत्रों में तुम्हें भर लेंगी। माल क्षेत्र के ऊपर इस प्रकार उमड़- घुमड़कर बरसना कि हल से तत्काल खुरची हुई भूमि गन्धवती हो उठे। फिर कुछ देर बाद चटक-गति से पुन: उत्तर की ओर चल पड़ना।

(17)

त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना,

वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः।

न क्षुद्रोपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय

प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः।।

अर्थः- वन में लगी हुई अग्नि को अपनी मूसलाधार वृष्टि से बुझाने वाले, रास्ते की थकान से चूर, तुम जैसे उपकारी मित्र को आम्रकूट पर्वत सादर सिर-माथे पर रखेगा क्षुद्रजन भी मित्र के अपने पास आश्रय के लिए आने पर पहले उपकार की बात सोचकर मुँह नहीं मोड़ते। जो उच्च हैं, उनका तो कहना ही क्या?

(18)

छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रै-

स्त्वय्यारूढे शिखरमचलः स्निग्धवेणीसवर्णे।

नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षणीयामवस्थां

मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः।।

अर्थः- पके फलों से दिपते हुए जंगली आम जिसके चारों ओर लगे हैं, उस पर्वत की चोटी पर जब तुम चिकनी वेणी की तरह काले रंग से घिर आओगे, तो उसकी शोभा देव-दम्पतियों के देखने योग्य ऐसी होगी जैसे बीच में साँवला और सब ओर से पीला पृथिवी का स्तन उठा हुआ हो।

(19)

स्थित्वा तस्मिन्वनचरवधूभुक्तकुञ्जे मुहूर्तं

तोयोत्सर्गं द्रुततरगतिस्तत्परं वर्त्म तीर्णः।

रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां

भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमंगे गजस्य।।

अर्थः- उस पर्वत पर जहाँ कुंजों में वनचरों की वधुओं ने रमण किया है, घड़ी-भर विश्राम ले लेना। फिर जल बरसाने से हलके हुए, और भी चटक चाल से अगला मार्ग तय करना। विन्ध्य पर्वत के ढलानों में ऊँचे-नीचे ढोकों पर बिखरी हुई नर्मदा तुम्हें ऐसी दिखाई देगी जैसे हाथी के अंगों पर भाँति- भाँति के कटावों से शोभा-रचना की गई हो।

(20)

तस्यास्तिक्तैर्वननगजमदैर्वासितं वान्तवृष्टि-

र्जम्बूकुञ्जप्रतिहतरयं तोयमादाय गच्छेः।

अन्तःसारं घन! तुलयितुं नानिलः शक्ष्यति त्वां

रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।।

अर्थः- जब तुम वृष्टि द्वारा अपना जल बाहर उँड़ेल चुको तो नर्मदा के उस जल का पान कर आगे बढ़ना जो जंगली हाथियों के तीते महकते मद से भावित है और जामुनों के कुंजों में रुक-रुककर बहता है। हे घन, भीतर से तुम ठोस होगे तो हवा तुम्हें न उड़ा, सकेगी, क्योंकि जो रीते हैं वे हलके, और जो भरे-पूरे हैं वे भारी-भरकम होते हैं।